सं. ख्रो.वि./जी.जी.एन./45-84/19538.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सांईन्टीफिक गलास एण्ड वैकियूम एप्रेटस कं. चन्द्र नगर, महरोली रोड, गुड़गांवा के श्रमिक श्रीं धर्मपाल तथा उसके प्रवधकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हंरियाणा के राज्यंपाल निवाद को न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिस्याणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 5415-3 श्रम-58/15254, दिमांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक, 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्धिट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्री धर्मपाल की सेव श्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है ?

सं.स्रो.वि./एफ.डी./54-84/19545.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं स्रोफिस मशीन प्रा.लि., 13/3, मथुरा रोड, फरीदावाद के श्रमिक श्री प्रीतम सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामलें में कोई सौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :---

इस लिए, अब, ग्रौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं 11495-जी-अमं/57/11245, दिनांक 7 फरवरीं, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्वकों तथ श्रमिक के वीच या तो विशादग्रस्त मामला है, या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है;

क्या श्री प्रीतम सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किसी राहत का हकदार है ?

दिनांक 18 मई, 1984

सं धौ.वि/हिसार/143-83/19618.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० (1) हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, हिसार, (2) मुख्य प्रशासक, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री रिसाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई धौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, भोद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864—ए.एस.ओ. (ई) अम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला म्याय- तिणंय हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों सथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रिसाल सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

दिनांक 23 मई, 1984

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./43-84/19967.—चूंकि हिस्याणा के राज्यपाल की राय है कि में. ठेकादार श्री सकल देव मार्फत मोहिन्द्रा विक्रम, 15/1, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राज बहादुर तथा उसके बन्प्रधकों के मध्य इसमें इसके बादलिखि मामले में कोई भौदो-गिक विवाद है;

ग्रीर चृंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायिवर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

1.7

इसलिए, श्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकार श्रिधसूचना सं. 5.413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधिनियम की घारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो किए उक्त प्रवत्रधकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है;—

क्या श्री राज बहादुर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार हैं ?

सं. श्रो.वि./सोनीपत/23-83/19974.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मैनेजिंग डायरेक्टर, हरियाणा स्टेट फेंडरेशन श्राफ कन्जूमर्ज को श्रो. होलसेल स्टोर लि., चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री किताब सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियः णा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-3एस.श्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री किताव सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार ?

दिनांक 25 मई, 1984

सं. ग्रो.वि./हिसार/18-83/20348.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि म. सिरसा सैन्ट्रल को-ग्राप्नेटिव वैंक लि., सिरसा के श्रमिक श्री हनुमान सिंह तथा उसके प्रवधकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद हैं;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यानिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं. 9642ब-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं. 3864ए.एस.श्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की घारा 7 के कथित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हनुमान सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का सकदार है ?

सं. त्रो. वि./हिसार/18-83/20355.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. सिरसा सैन्ट्रल को-श्राप्रेटिव बैंक लिमिटिड, सिरसा के श्रमिक श्री मान सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक दिवाद है;

श्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिविस्चना सं. 9642-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिविस्चना सं. 3864-ए. एस. ओ. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिविन्यम की धारा 7 के गठित श्रम न्यायलय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री मान सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? तो वह किस राहत का हकदार है ?